पाठ - 5

कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना

27/10/2022

PANKAJ
Page No.:
Date : / /

(1) राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती :—

⇒ 27 मई 1964 ई० को नेहरूजी की मृत्यु के बाद नेहरूजी के राजनीतिक उत्तराधिकारी को लेकर कई अनुमान लगाए जा रहे थे कि नेहरू जी के बाद कौन देश का नेतृत्व करेगा ? साथ ही भारत के लोगो को संदेह था कि यहाँ नेहरू के बाद लोकतंत्र स्थापित भी रह पायेगा या नहीं ?

⇒ सन् 1960 के दशक को 'खतरनाक दशक' कहा जाता है क्योंकि गरीबी, असामानता, सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन आदि के सवाल भी अनसुलझे थे। जिस कारण लोकतंत्र के असफल होने अथवा देश के बिखरने की सम्भावना व्यक्त की जा ~~रही~~ रही थी।

(i) नेहरू के बाद शास्त्री :—

⇒ नेहरूजी की मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के० कामराज ने अपनी पार्टी के नेताओं तथा सांसदो से विचार विमर्श किया। सर्वसम्मति से लाल बहादुर शास्त्री कांग्रेस संसदीय दल के निर्विरोध नेता चुने गए तथा इस तरह वे देश के द्वितीय प्रधानंत्री बने।

⇒ शास्त्रीजी सन् 1964 से 1966 ई० तक देश के प्रधानमंत्री रहे। इस पद पर वे बड़े कम दिनों तक रहे परन्तु इसी छोटी अवधि में देश ने दो बड़ी चुनौतियों का सामना किया। भारत-चीन युद्ध के कारण पैदा हुई आर्थिक कठिनाइयों से उबरने का प्रयत्न कर रहा था। साथ ही मानसून की असफलता से देश में सूखे की स्थिति थी।

(ii) शास्त्री के बाद इंदिरा गाँधी :—

शास्त्री जी की मृत्यु के बाद कांग्रेस के सामने पुनः ~~राजनीतिक~~ उत्तराधिकारी का सवाल उठ खड़ा हुआ। इस बार मोरारजी

देसाई और इंदिरा गाँधी के बीच कड़ा मुकाबला था। मोरारजी देसाई बंबई प्रांत (वर्तमान महाराष्ट्र व गुजरात) के मुख्यमंत्री के पद पर रह चुके थे।

⇒ कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं ने इंदिरा गांधी को समर्थन देने का मन बनाया परन्तु इंदिरा गांधी के नाम पर सर्वसम्मति स्थापित नहीं की जा सकी। फैसले के लिए कांग्रेस के सांसदों ने गुप्त मतदान किया। इंदिरा गांधी ने मोरारजी देसाई को पराजित किया। उन्हें कांग्रेस पार्टी के दो-तिहाई से अधिक सांसदों ने अपना मत दिया था।

⇒ कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने संभवत यह सोचकर उनका समर्थन किया होगा कि प्रशासनिक व राजनीतिक मामलों में विशेष अनुभव न होने के कारण समर्थन और दिशा-निर्देश के लिए इंदिरा गांधी उन पर निर्भर रहेंगी। प्रधानमंत्री बनने के एक वर्ष के भीतर ही इंदिरा गांधी को लोकसभा के चुनावों में पार्टी का नेतृत्व करना पड़ा।

(2.) चौथा आम चुनाव, 1967 :—

⇒ भारत के राजनीतिक व चुनावी इतिहास में सन् 1967 के वर्ष को अत्यन्त महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है। सन् 1952 के बाद से पूरे देश में कांग्रेस पार्टी का जो राजनीतिक दबदबा कायम था वह सन् 1967 के चुनावों में समाप्त हो गया।

(i) चुनावों का संदर्भ :—

⇒ चौथे आम चुनाव के आने तक देश में बड़े बदलाव हो चुके थे। दो प्रधानमंत्रियों का जल्दी-जल्दी देहावसान हुआ। और नए प्रधानमंत्री को पद सँभाले हुए अभी एक साल भी नहीं हुआ (इंदिरा गांधी) साथ ही राजनीति के लिहाज से

कम अनुभवी मानी जा रही थी।

⇒ इस समय मे देश गंभीर आर्थिक संकट में था।

⇒ इंदिरा गांधी की सरकार के शुरुआती फैसलों में एक था- रुपये का अवमूल्यन करना।

⇒ साम्यवादी और समाजवादी पार्टी ने व्यापक समानता के लिए संघर्ष छेड़ दिया।

(ii) गैर-कांग्रेसवाद :-

⇒ विपक्षी दल जनविरोध की अगुवाई कर रहे थे और सरकार पर दबाव डाल रहे थे।

⇒ इन दलो को लगा कि इंदिरा गाँधी की अनुभवहीनता और कांग्रेस की अंदरूनी उलापटक से उन्हें कांग्रेस को सत्ता से हटाने का एक अवसर हाथ लगा है। समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने इस रणनीति को 'गैर-कांग्रेसवाद' का नाम दिया।

(iii) चुनाव जनादेश :—

⇒ कांग्रेस पहली बार नेहरू के बिना मतदाताओं का सामना कर रही थी।

⇒ फरवरी 1967 को चतुर्थ आम चुनाव में कांग्रेस को जैसे-तैसे लोकसभा में बहुमत तो मिल गया लेकिन उसको प्राप्त मतों के प्रतिशत एवं सीटों की संख्या में भारी कमी आयी। इसी को पर्यवेक्षको ने 'राजनीतिक भूकंप' की संज्ञा दी।

⇒ कांग्रेस को सात राज्यों में बहुमत नहीं मिला। दो अन्य राज्यों में दल-बदल के कारण यह पार्टी सरकार नहीं बना सकी।

⇒ मद्रास प्रांत में एक क्षेत्रीय पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कषगम पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता पाने में सफल रही। डीएमके हिन्दी-विरोधी आन्दोलन का नेतृत्व करके सत्ता में आई थी।

(iv) गठबंधन :—

⇒ सन् 1967 में चुनावों में गठबंधन की परिघटना सामने आई। चूँकि किसी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था, इसलिए अनेक गैर-कांग्रेसी पार्टियों ने एकजुट होकर संयुक्त विधायक दल बनाया और गैर-कांग्रेसी सरकारों को समर्थन दिया। इसी कारण इन सरकारों को संयुक्त विधायक दल की सरकार कहा गया।

⇒ पंजाब में बनी संयुक्त विधायक दल की सरकार को 'पापुलर यूनाइटेड फ्रंट' की सरकार कहा गया। इसमें उस वक्त के दो परस्पर प्रतिस्पर्धी अकाली दल-संत ग्रुप और मास्तर ग्रुप शामिल थे।

(v) दल-बदल :—

⇒ सन् 1967 से देश की राजनीति में 'दल-बदल' तथा 'आया राम - गया राम' की राजनीति प्रारम्भ हुई। बाद के समय में दल-बदल रोकने के लिए संविधान में संशोधन किया गया।

(3.) कांग्रेस में विभाजन :—

⇒ राज्यों में बनी अधिकतर गैर-कांग्रेसी गठबंधन की सरकारें अधिक दिनों तक नहीं टिक पाई। इन सरकारों ने बहुमत खोया और उन्हें या तो नए सिरे से गठबंधन बनाना पड़ा या केन्द्र को वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़ा।

(i) इंदिरा बनाम सिंडिकेट :—

⇒ इंदिरा गाँधी को वास्तविक चुनौती विपक्ष से नहीं बल्कि अपनी पार्टी के भीतर से मिली।